इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय
Indira Gandhi National Tribal University
Inspiring Students, Empowering Society
(संसद के अधिनियम के अधीन स्थापित केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by an Act of Parliament)

Prof. Shri Prakash Mani Tripathi
Vice –Chancellor

सं. इंजवि/कु./2020/
दिनांक: 14.09.2020

हिन्दी दिवस पर कुलपति का संदेश

आप सभी शिक्षकवृन्द, अधिकारीगण, कर्मचारीगण और प्रिय विद्यार्थियों को हिन्दी दिवस की बधाई। हिन्दी भाषा भारतीय संविधान स्वीकृत राजभाषा है। 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने यह निर्णय लिया था कि – संघ की राजभाषा हिन्दी और उसकी लिपि देवनागरी होगी। हिन्दी भाषा भारत में व्यापक प्रयोग क्षेत्र की भाषा है। स्वतंत्रता संग्राम में गाँधी जी के नेतृत्व में हिन्दी को राष्ट्रभाषा का सम्मान दिया गया और राष्ट्रीय एकीककरण में हिन्दी ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वातंत्र्य आंदोलन के अनन्तर हिन्दी के साथ हिन्दीतर भारत की अनेक विभूतियाँ खड़ी हो गईं।

हिन्दी दिवस मात्र हिन्दी ही नहीं, समस्त भारतीय भाषाओं का दिवस है। सभी भारतीय भाषाएँ राष्ट्रीय भाषाएँ है। इनके बीच स्नेह संबंध से ही हिन्दी का भी विकास होगा और अन्य भारतीय भाषाओं का भी। यह दिवस हमें भाषाई चेतना जागृत करने का अवसर देता है। भाषाई चेतना से ही राष्ट्रीय चेतना का सम्यक विकास होता है। राष्ट्रीय चेतना के सारे तत्व हिन्दी सहित भारतीय भाषाओं में सन्निहित हैं।

पूरे विश्व में हमारी पहचान की भाषा हिन्दी है। विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है, शोध किए जाते हैं। सभी देशों के लोग यह मान ते हैं कि यदि हमें भारत को जानना है तो हिन्दी सीखनी चाहिए। हिन्दी क्षेत्र की बोलियाँ भी अति समृद्ध हैं। कई बोलियों में साहित्य रचना की जाती है। आधुनिक संदर्भ में हिन्दी की बोलियों पर काम करना हमारा दायित्व है। हिन्दी साहित्य के अध्ययन और शोध के साथ ही हिन्दी भाषा और उसकी शैलियों पर भी शोधकार्य अपेक्षित है। हिंदी संपर्क, संबंध, संवाद, सम्मान और सहकार की भाषा है, आहार, आय, आजीविका, आवागमन की भाषा है, विचार, व्यवहार, बाजार, व्यापार की भाषा है, परंपरा, पहचान, प्रकृति और परिवेश की भाषा है, सभ्यता, संस्कृति, संस्कार सहयोग और समन्वय की भाषा है तथा व्यावहारिक, व्याकरण सिद्ध आधार भाषा है।

वस्तुतः राजभाषा के रूप में हिन्दी का क्रियान्वयन और भी गति और कौशल के साथ किया जा रहा है। हिन्दी भाषा हमारी राष्ट्रीय अस्मिता की भाषा है। अन्य भारतीय भाषाओं से हिंदी का कोई दुराव नहीं है, अलगाव नहीं है। राष्ट्रभाषा ही एक राष्ट्र की व्यवस्थित और सुनिश्चित विकास यात्रा का अवलंब होती है। हिंदी भारतीय संस्कृति की उद्घोषक भाषा है। हिंदी शब्द सामर्थ्य, साहित्य और संप्रेषणीयता की दृष्टि से अब एक वैश्विक भाषा है।

हिंदी की सर्वप्रमुख विशिष्टता यह है कि वह किसी भी अन्य भाषा या बोली की श्रेष्ठता को कमतर नहीं करती, वरन् बहुत ही उदारतापूर्वक अन्य भाषाओं के शब्दों को सहर्ष हृदयंगम करती हुई आगे बढ़ती जा रही है। जिस प्रकार भारतीय संस्कृति अनेकानेक व्यवधान एवं अवरोधों के बाद भी गतिमान है और समृद्ध हो रही है, ठीक उसी तरह राजभाषा हिंदी भी समस्त अवरोधों को पार करती हुई वैश्विक स्वरूप प्राप्त करने की ओर अग्रसर है।

भाषा विकास की दृष्टि से हिन्दी के प्रयोजनमूलक रूपों का विस्तार और उसके आधुनिकीकरण की अत्यंत आवश्यकता है। ऐसा करने से ही हिन्दी का राजभाषा के रूप में और भारत की केंद्रीय भाषा के रूप में महत्व बढ़ सकेगा। इस भाषा में अखिल भारतीय संपर्क की भाषा बनने की क्षमता है। गाँधी जी ने भी यही बात कही थी और उन्होंने हिन्दीतर राज्यों में राष्ट्रभाषा हिन्दी के उत्थान का महत्वपूर्ण कार्य किया था।

अमरकंटक, जिला अनूपपुर, म.प्र.–484887 Amarkantak, Dist. Anuppur, M.P.-484887
Phone : 07629-269710 || Fax 07629 269712 || eMail : vc@igntu.ac.in || website : www.igntu.ac.in

आज हिन्दी भाषा तकनीकी विकास के साथ भी कदम से कदम मिलाकर चल रही है। हिन्दी फिल्मों तथा संचार माध्यमों में हिन्दी ने अपनी लोकप्रियता स्थापित की है। हिन्दी के कई सॉफ्टवेयर आज विकसित हैं। सोशल मीडिया ने भी हिन्दी की लोकप्रियता में वृद्धि किया है। हिंदी के विकास विस्तार में मीडिया (इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिंट) सोशल मीडिया, तकनीक, चलचित्र जगत, विज्ञापन और श्री अटल बिहारी बाजपेयी और विद्यमान वैश्विक फलक पर महानायक मोदी जैसे राजनेताओं के संभाषण अतिशय उपयोगी हैं, इस प्रक्रिया में आवागमन के साधनों – ट्रेन, बस, ट्रक, टैक्सी, जहाज के साथ ही होटल ढाबा, रेस्तरां और छविगृहों तथा चलचित्रों की भूमिका है। गूगल, NET पर हिंदी संबंधी सामग्री की प्रचुरता है। कंप्यूटर और स्मार्टफोन पर हिंदी में वाचन, अंगण, संवाद और संदेश प्रेषण की सुविधा सुलभ है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारतीय भाषाओं को गौरव देनेवाली शिक्षा नीति है। भारतीय भाषाओं के प्रति इतनी संवेदनशील शिक्षा नीति पहली बार राष्ट्र के समक्ष आई है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संबंध में यह कहा है कि इसे भविष्य को ध्यान में रखकर बनाया गया है जिसमें अतीत से आधुनिकता तक का समावेश है। इसमें हिन्दी सहित सभी भारतीय भाषाएँ अपना उज्ज्वल भविष्य देख रही हैं। हिन्दी भाषा के भीतर भारतीय अतीत के समस्त संदर्भ अभिव्यक्त हैं और उसमें आधुनिकता का भी समावेश है। वह अपने प्रयोक्ताओं की आकांक्षाओं के अनुरूप अपना रूपाकार बदलती रही है।

सामयिक संदर्भों में हिन्दी भाषा की तीन महत्वपूर्ण भूमिकाएँ हैं – 1. हिन्दी की बोलियों के बीच संपर्क भाषा की भूमिका, 2. भारतीय भाषाओं के बीच संपर्क भाषा की भूमिका और 3. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व भाषा की भूमिका। हमें इन तीनों भूमिकाओं में हिन्दी की स्थिति को और भी सुदृढ़ करना है। ऐसा करने से ही भारत राष्ट्र के गौरव में अभिवृद्धि हो सकेगी। हिन्दी भाषा एक लोचपूर्ण भाषा है। यह अति वैज्ञानिक है और इसकी लिपि व्यवस्था सुचिंतित है। इसलिए हिन्दी भाषा को सीखना भी सहज होता है।

आइए हम हिंदी के विकास एवं इसे वैश्विक स्वरूप प्रदान करने के लिए प्राणपण से कार्य करें।

– प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी
कुलपति